PAREEKSHA BAAZ
Institute for CSE Examination

PRELIM POINTERS

30th NOV 2024

For more exam related videos and guidance, scan the code to join our YouTube Channel

For more exam related material, scan the code to join our Telegram Channel

Scan the code to join our Instagram Channel

INDEX

SN.	TOPIC
1	टाटो-I जलविद्युत परियोजना
2	AUKUS क्या है?
3	एकलव्य डिजिटल प्लेटफॉर्म
4	ओपेक+ क्या है?
5	बार-टेल्ड गॉडविट क्या है?
6	जापानी इन्सेफेलाइटिस क्या है?
7	गिरनार वन्यजीव अभयारण्य
8	रेंगमा नागा जनजाति
9	साइबेरियाई डेमोइसेल क्रेन
10	के-4 बैलिस्टिक मिसाइल

टाटो-I जलविद्युत परियोजना

अवलोकन:

आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने हाल ही में अरुणाचल प्रदेश के शि योमी जिले में टाटो-I जलविद्युत परियोजना (एचईपी) के लिए 1750 करोड़ रुपये के निवेश को मंजूरी दी।

टाटो-I जलविद्युत परियोजना के बारे में:

- **1750 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत वाली यह परियोजना अरुणाचल प्रदेश** के शि योमी जिले में स्थित होगी ।
- **186 मेगावाट (3 x 62 मेगावाट)** की स्थापित क्षमता वाली इस परियोजना के 50 महीनों में पूरा होने की उम्मीद है और इससे सालाना 802 मिलियन यूनिट (एमयू) बिजली पैदा होगी।
- उत्पादित बिजली से अरुणाचल प्रदेश में बिजली आपूर्ति में सुधार होगा और राष्ट्रीय ग्रिड को संतुलित करने में योगदान मिलेगा।
- इसका विकास **नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड (नीपको) और अरुणाचल प्रदेश सरकार के बीच एक संयुक्त उद्यम के माध्यम से किया जाएगा।**
- केंद्र सरकार सड़क, पुल और ट्रांसमिशन लाइनों जैसे बुनियादी ढांचे के लिए 77.37 करोड़ रुपये प्रदान करेगी, साथ ही राज्य की इक्विटी हिस्सेदारी के लिए 120.43 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता भी प्रदान करेगी।
- **अरुणाचल प्रदेश को उत्पादित बिजली का 12% मुफ्त मिलेगा** , तथा अतिरिक्त 1% स्थानीय क्षेत्र विकास निधि (एलएडीएफ) को आवंटित किया जाएगा।

प्रश्न 1 : नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड (NEEPCO) क्या है?

नीपको भारत सरकार के विद्युत मंत्रालय के अंतर्गत एक मिनीरत्न सीपीएसई है, जो जल, ताप एवं नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से विद्युत उत्पादन करती है।

AUKUS क्या है?

अवलोकन:

न्यूजीलैंड में चीनी राजदूत ने आगाह किया है कि AUKUS में शामिल होने से न्यूजीलैंड-चीन संबंधों को नुकसान हो सकता है।

AUKUS के बारे में:

- यह **यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य** अमेरिका और **ऑस्ट्रेलिया** के बीच एक **त्रिपक्षीय सुरक्षा साझेदारी है जिस पर 2021 में सहमति बनी थी जो हिंद-प्रशांत क्षेत्र में प्रौद्योगिकी साझाकरण** पर केंद्रित है ।
- यह गठबंधन व्यापक रूप से इस रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र में **चीनी आक्रामकता और महत्वाकांक्षाओं के खिलाफ** प्रतिक्रिया और निवारक के रूप में एक रणनीतिक निर्माण माना जाता है ।
- AUKUS का उद्देश्य दीर्घकालिक और चल रहे द्विपक्षीय संबंधों के आधार पर सुरक्षा और रक्षा हितों का समर्थन करने के लिए प्रत्येक सरकार की क्षमता को मजबूत करना है।
- इसमें **दो प्रमुख स्तंभ शामिल हैं।**
    - **स्तंभ 1** ऑस्ट्रेलिया को अपना **पहला पारंपरिक रूप से सशस्त्र, परमाणु ऊर्जा से चलने वाला पनडुब्बी बेड़ा हासिल करने में सहायता करने** पर केंद्रित है । इसमें ऑस्ट्रेलिया को **परमाणु हथियारों का हस्तांतरण** शामिल **नहीं है ।**
    - **स्तंभ 2 आठ उन्नत सैन्य क्षमता क्षेत्रों में सहयोग** पर केंद्रित है : कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), क्वांटम प्रौद्योगिकियां, नवाचार, सूचना साझाकरण, तथा साइबर, समुद्र के नीचे, हाइपरसोनिक, काउंटर-हाइपरसोनिक और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध क्षेत्र।
- **पनडुब्बी घटक:**
    - इसे **ऑस्ट्रेलिया को परमाणु ऊर्जा चालित हमलावर पनडुब्बियों (एसएसएन) से लैस करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।**

- **कुल मिलाकर, ऑस्ट्रेलिया को आठ** नई परमाणु पनडुब्बियां मिलेंगी , जिन्हें **SSN-AUKUS कहा जाएगा।**
- **ये पनडुब्बियां ब्रिटिश डिजाइन** पर आधारित होंगी लेकिन इनमें **अमेरिकी प्रौद्योगिकी** या अमेरिकी युद्ध प्रणाली होगी।
- AUKUS के साथ ऑस्ट्रेलिया **परमाणु ऊर्जा से चलने वाली पनडुब्बियों से लैस होने वाला** दुनिया का **सातवां देश** बन जाएगा और यूनाइटेड **किंगडम के बाद दूसरा देश बन जाएगा**, जिसके साथ **संयुक्त राज्य अमेरिका ने यह तकनीक साझा की है।**
- इससे हिंद-प्रशांत क्षेत्र में ऑस्ट्रेलिया की समुद्री क्षमताओं में उल्लेखनीय वृद्धि होगी, क्योंकि परमाणु ऊर्जा से चलने वाली पनडुब्बियां कई फायदे प्रदान करती हैं, जैसे विस्तारित रेंज, धीरज और गुप्त रहने की विशेषताएं।
- हालाँकि, इन देशों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि उनका उद्देश्य नई पनडुब्बियों को **परमाणु हथियारों से लैस करना नहीं** है । ऐसा इसलिए है क्योंकि **ऑस्ट्रेलिया परमाणु अप्रसार संधि (NPT) का हस्ताक्षरकर्ता है,** जो उसे परमाणु हथियार हासिल करने या तैनात करने से रोकता है।

प्रश्न 1 : परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) क्या है?

एनपीटी एक अंतरराष्ट्रीय संधि है जिसका उद्देश्य परमाणु हथियारों और हथियार प्रौद्योगिकी के प्रसार को रोकना, परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग में सहयोग को बढ़ावा देना और परमाणु निरस्त्रीकरण तथा सामान्य और पूर्ण निरस्त्रीकरण को प्राप्त करने के लक्ष्य को आगे बढ़ाना है। यह संधि परमाणु-हथियार वाले राज्यों द्वारा निरस्त्रीकरण के लक्ष्य के लिए बहुपक्षीय संधि में एकमात्र बाध्यकारी प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व करती है। पांच परमाणु-हथियार वाले राज्यों सहित कुल 191 देश इस संधि में शामिल हुए हैं। भारत ने संधि की भेदभावपूर्ण प्रकृति के बारे में चिंताओं का हवाला देते हुए एनपीटी पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं क्योंकि यह पांच मान्यता प्राप्त परमाणु हथियार राज्यों (चीन, फ्रांस, रूस, यूके और यूएसए) के परमाणु हथियारों के एकाधिकार को कायम रखता है।

एकलव्य डिजिटल प्लेटफॉर्म

अवलोकन:

हाल ही में भारतीय सेना प्रमुख ने भारतीय सेना के लिए "एकलव्य" नामक एक ऑनलाइन शिक्षण मंच लॉन्च किया।

एकलव्य डिजिटल प्लेटफॉर्म के बारे में:

- इसका विकास सेना प्रशिक्षण कमान मुख्यालय के तत्वावधान में किया गया है तथा प्रायोजक एजेंसी **आर्मी वार कॉलेज है ।**
- इस प्लेटफॉर्म को "भास्कराचार्य राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुप्रयोग एवं भूसूचना विज्ञान संस्थान" (बीआईएसएजी-एन), गांधीनगर द्वारा सूचना प्रणाली महानिदेशालय के सहयोग से विकसित किया गया है।
- इस प्लेटफॉर्म को **आर्मी डेटा नेटवर्क पर होस्ट किया गया** है और इसमें एक स्केलेबल आर्किटेक्चर है। यह मुख्यालय आर्मी ट्रेनिंग कमांड को भारतीय सेना के किसी भी प्रशिक्षण प्रतिष्ठान को सहजता से एकीकृत करने में सक्षम बनाता है, **जिनमें से प्रत्येक व्यापक श्रेणी के पाठ्यक्रमों की मेजबानी करने में सक्षम है।**
- यह पहल भारतीय सेना द्वारा स्वयं को "परिवर्तन के दशक" में आगे बढ़ाने के साथ संरेखित है, जैसा कि सीओएएस द्वारा परिकल्पित है और साथ ही 2024 के लिए भारतीय सेना की थीम **"प्रौद्योगिकी अवशोषण का वर्ष" के अनुरूप है।**
- छात्र अधिकारियों को एक साथ कई पाठ्यक्रमों के लिए पंजीकरण करने की अनुमति है।
- तीन श्रेणियों **के पाठ्यक्रम** आयोजित किए जाते हैं
    - **'प्री-कोर्स प्रिपरेटरी कैप्सूल': इसमें विभिन्न श्रेणी 'ए' प्रशिक्षण प्रतिष्ठानों** में आयोजित किए जा रहे सभी ऑफ़लाइन भौतिक पाठ्यक्रमों के लिए अध्ययन सामग्री है । इसका उद्देश्य "मूल बातें" को ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में स्थानांतरित करना है ताकि भौतिक पाठ्यक्रमों में "अनुप्रयोग भाग" पर ध्यान देने के साथ अधिक से अधिक समकालीन सामग्री हो।
    - **नियुक्ति या विशिष्ट कार्यभार से संबंधित पाठ्यक्रम:** इस श्रेणी के पाठ्यक्रम अधिकारियों को अपनी पसंद के क्षेत्र में **विशेषज्ञता प्राप्त करने में सक्षम बनाएंगे, जिससे उनकी रोजगार योजना बनाने में सहायता मिलेगी।**

- **व्यावसायिक विकास सुइट:** इसमें रणनीति, परिचालन कला, नेतृत्व, संगठनात्मक व्यवहार, वित्त, पढ़ने की कला, शक्तिशाली लेखन, उभरती हुई प्रौद्योगिकी आदि पर पाठ्यक्रम शामिल होंगे।

- **एकलव्य में खोज योग्य "नॉलेज हाईवे"** की कार्यक्षमता भी है , जिसमें विभिन्न पत्रिकाएं, शोध पत्र और लेख आदि एक ही विंडो के अंतर्गत अपलोड किए जाते हैं।
- यह मंच अधिकारियों में सतत व्यावसायिक सैन्य शिक्षा को प्रोत्साहित करने, मौजूदा शारीरिक पाठ्यक्रम को समृद्ध बनाने, विशेषज्ञ नियुक्तियों के लिए अधिकारियों को तैयार करने और डोमेन विशेषज्ञता को प्रोत्साहित करने में एक लंबा रास्ता तय करेगा।

प्रश्न 1: भास्कराचार्य राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुप्रयोग एवं भू-सूचना विज्ञान संस्थान क्या है?

यह एक स्वायत्त वैज्ञानिक सोसायटी है, जो भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत पंजीकृत है, जिसका उद्देश्य प्रौद्योगिकी विकास एवं प्रबंधन, अनुसंधान एवं विकास, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को सुविधाजनक बनाना, क्षमता निर्माण और भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी हस्तांतरण एवं उद्यमिता विकास का समर्थन करना है।

ओपेक+ क्या है?

अवलोकन:

हाल ही में, अमेरिकी गैसोलीन स्टॉक आपूर्ति में अप्रत्याशित उछाल और उत्पादन नीति पर ओपेक+ की बैठक में देरी के बाद कच्चे तेल की कीमतें स्थिर रहीं।

ओपेक+ के बारे में:

- **यह 22 तेल निर्यातक देशों** का समूह है जो विश्व बाजार में कितना कच्चा तेल बेचा जाए, इसका निर्णय लेने के लिए नियमित रूप से बैठक करता है।
- इन देशों का लक्ष्य तेल बाजार में स्थिरता लाने के लिए **कच्चे तेल के उत्पादन को समायोजित करने पर मिलकर काम करना है।**
- **उत्पत्ति:** ये राष्ट्र 2016 के अंत में एक समझौते पर पहुंचे थे, "नियमित और टिकाऊ आधार पर ओपेक और गैर-ओपेक उत्पादक देशों के बीच सहयोग के लिए एक ढांचे को संस्थागत बनाने के लिए।"
- इस समूह के मूल में **ओपेक** (तेल निर्यातक देशों का संगठन) के 12 सदस्य हैं, जो मुख्य रूप से मध्य पूर्वी और अफ्रीकी देश हैं।
- **सदस्य:** इसमें 12 ओपेक देश तथा अज़रबैजान, बहरीन, ब्रुनेई, कजाकिस्तान, रूस, मैक्सिको, मलेशिया, दक्षिण सूडान, सूडान और ओमान शामिल हैं।

ओपेक क्या है?

- **यह तेल निर्यातक देशों** का एक स्थायी अंतर-सरकारी संगठन है ।
- **गठन:** इसकी **स्थापना 1960 में** पांच संस्थापक सदस्यों ईरान, इराक, कुवैत, सऊदी अरब और वेनेजुएला द्वारा की गई थी।
- वर्तमान में इसके **12 सदस्य हैं,** जिनमें अल्जीरिया, कांगो, इक्वेटोरियल गिनी, गैबॉन, लीबिया, नाइजीरिया और संयुक्त अरब अमीरात शामिल हैं।
- **अंगोला ने 1 जनवरी 2024** से अपनी सदस्यता वापस ले ली ।

- **मुख्यालय:** वियना, ऑस्ट्रिया।

प्रश्न 1: ब्रेंट ऑयल क्या है?

यह उत्तरी सागर के विभिन्न तेल क्षेत्रों से निकाला जाने वाला हल्का, मीठा कच्चा तेल है। इसके अनूठे गुण, कम घनत्व और कम सल्फर सामग्री, ब्रेंट कच्चे तेल को गैसोलीन जैसे उत्पादों में संसाधित करना आसान बनाते हैं। चूंकि इसकी आपूर्ति जल-जनित है, इसलिए ब्रेंट कच्चे तेल को दूर-दराज के स्थानों तक ले जाना आसान है।

बार-टेल्ड गॉडविट क्या है?

अवलोकन:

एक असामान्य घटना में, हाल ही में एक प्रकृतिविज्ञानी ने पुलिकट झील में पांच बार-टेल्ड गॉडविट्स देखे।

बार-टेल्ड गॉडविट के बारे में:

- यह एक उल्लेखनीय **प्रवासी तटीय पक्षी है जो प्रवास के दौरान अपनी असाधारण सहनशीलता के लिए प्रसिद्ध है।**
- वैज्ञानिक नाम: लिमोसा लैपोनिका
- **वितरण** :
    - बार-टेल्ड गॉडविट प्रजाति **उत्तरी यूरोप और एशिया , पश्चिमी अलास्का, अफ्रीका, फारस की खाड़ी , भारत , दक्षिण-पूर्व एशिया, चीन और ऑस्ट्रेलिया में पाई जाती है।**
    - ये गॉडविट प्रजातियां **आर्कटिक क्षेत्र में प्रजनन करती हैं** ।
    - भारत में, शीत ऋतु में बार-टेल्ड गॉडविट प्रजाति गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, गोवा, केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में पाई जाती है।
- बार-टेल्ड गॉडविट्स **बिना रुके उड़ान के लिए विश्व रिकार्डधारी** हैं : इन्हें केवल 11 दिनों में अलास्का से तस्मानिया तक 13,500 किमी की यात्रा करते हुए 50 किमी/घंटा से अधिक की औसत गति से उड़ते हुए देखा गया है, तथा इस यात्रा में इनका लगभग आधा वजन कम हो गया है।
- **विशेषताएँ:**
    - वे काफी **बड़े जलचर होते हैं,** जिनमें **मादाएं नर से बड़ी होती हैं।**
    - यह मुख्यतः **ऊपर से धब्बेदार भूरा** तथा नीचे से हल्का और अधिक **एकसमान पीला रंग का होता है।**
    - इसके **निचले पंख हल्के सफेद रंग के** होते हैं तथा इसकी चोंच लम्बी तथा थोड़ी ऊपर की ओर उठी हुई होती है।

- जैसा कि नाम से पता चलता है, **सफेद पूंछ भूरे रंग से धारीदार होती है** ।

- **आईयूसीएन रेड लिस्ट: निकट संकटग्रस्त**

प्रश्न 1 : पुलिकट झील कहां स्थित है?

पुलिकट झील भारत की दूसरी सबसे बड़ी खारे पानी की झील है, जो देश के पूर्वी तट पर स्थित है। यह आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु की सीमाओं तक फैली हुई है, जो इस क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिक और आर्थिक भूमिका निभाती है।

जापानी इन्सेफेलाइटिस क्या है?

अवलोकन:

आधिकारिक सूत्रों ने हाल ही में बताया कि राष्ट्रीय राजधानी में जापानी इंसेफेलाइटिस का एक "पृथक" मामला सामने आया है।

जापानी इंसेफेलाइटिस के बारे में:

- **यह जापानी इंसेफेलाइटिस (बी) वायरस** के कारण होने वाला एक संभावित **गंभीर वायरल जूनोटिक रोग है।**
- **संचरण** :
    - यह वायरस **पशुओं से** - विशेष रूप से सूअरों और आर्डेइडे परिवार के पक्षियों, जैसे मवेशी बगुले, तालाब बगुले आदि से - **मनुष्यों में विष्णुई समूह के क्यूलेक्स मच्छर द्वारा फैलता है।**
    - इस वायरस का **मानव-से-मानव संचरण नहीं होता** है ।
- यह रोग **एशिया के ग्रामीण क्षेत्रों में सबसे अधिक पाया जाता** है , विशेषकर **मानसून के मौसम में** जब मच्छरों का प्रजनन अधिक होता है।
- **लक्षण** :
    - यह **मस्तिष्क को प्रभावित करता है** , जिसके परिणामस्वरूप **बुखार, सिरदर्द, उल्टी** , तथा भ्रम, दौरे और पक्षाघात जैसे **तंत्रिका संबंधी लक्षण उत्पन्न होते हैं।**
    - यद्यपि कई संक्रमित व्यक्तियों में हल्के लक्षण दिखाई दे सकते हैं या कोई लक्षण दिखाई नहीं दे सकते, लेकिन **गंभीर मामलों में स्थायी मस्तिष्क क्षति या मृत्यु हो सकती है।**
- **रोकथाम और उपचार:**
    - **टीकाकरण सबसे प्रभावी रोकथाम रणनीति** है , विशेष रूप से स्थानिक क्षेत्रों में।
    - प्रारंभिक निदान और सहायक उपचार से लक्षणों को प्रबंधित करने में मदद मिल सकती है, लेकिन जापानी एन्सेफलाइटिस के लिए **कोई विशिष्ट एंटीवायरल उपचार नहीं है।**
    - **केंद्र सरकार के दिशानिर्देशों** के अनुसार , 2013 से **वैक्सीन की दो खुराकें सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम का हिस्सा** रही हैं ।

प्रश्न 1 : वायरस क्या है?

वायरस एक संक्रामक सूक्ष्म जीव है जिसमें न्यूक्लिक एसिड (डीएनए या आरएनए) का एक खंड होता है जो प्रोटीन कोट से घिरा होता है। एक वायरस अकेले प्रतिकृति नहीं बना सकता; इसके बजाय, उसे कोशिकाओं को संक्रमित करना चाहिए और खुद की प्रतियां बनाने के लिए मेजबान कोशिका के घटकों का उपयोग करना चाहिए। अक्सर, एक वायरस इस प्रक्रिया में मेजबान कोशिका को मार देता है, जिससे मेजबान जीव को नुकसान होता है। मानव रोग पैदा करने वाले वायरस के प्रसिद्ध उदाहरणों में एड्स, कोविड-19, खसरा और चेचक शामिल हैं।

गिरनार वन्यजीव अभयारण्य

अवलोकन:

गिरनार वन्यजीव अभयारण्य के पृथ्वी अवलोकन (ईओ) डेटा से पता चलता है कि मुख्य मंदिर क्षेत्र में या उसके आस-पास 2000 से 2020 तक बस्तियां बढ़ीं, वहीं इसी अवधि के दौरान घने जंगल का एक बड़ा क्षेत्र खुले जंगल में परिवर्तित हो गया।

गिरनार वन्यजीव अभयारण्य के बारे में:

- **यह गुजरात के जूनागढ़ जिले** में स्थित है ।
- **यह गिरनार पहाड़ियों** के बीहड़ इलाके में फैला हुआ है , जो **सौराष्ट्र क्षेत्र** का एक हिस्सा है ।
- इसे 2008 में वन्यजीव अभयारण्य घोषित किया गया था।
- गिरनार पहाड़ियों के आसपास स्थित यह अभयारण्य एशियाई शेर सहित कई लुप्तप्राय प्रजातियों का घर है।
- **वनस्पति** :
    - मुख्यतः **शुष्क पर्णपाती वन** जिनमें सागौन, ढाक, बबूल और अन्य सूखा प्रतिरोधी पौधे पाए जाते हैं।
    - अभयारण्य में **घने जंगल, खुली झाड़ियाँ और घास के मैदानों का मिश्रण है।**
- **जीव-जंतु** :
    - यह प्रचुर मात्रा में वन्य जीवन से भरा हुआ है, जिसमें **एशियाई शेर, चित्तीदार हिरण, सांभर, चौसिंघा, चिंकारा,** तेंदुए, भारतीय सुनहरे सियार और पक्षियों की लगभग 300 प्रजातियां शामिल हैं, जिनमें स्थानीय और प्रवासी दोनों शामिल हैं।
    - यह **गिर राष्ट्रीय उद्यान की शेर आबादी के विस्तार** के रूप में कार्य करता है ।

प्रश्न 1 : पर्णपाती वन क्या हैं?

पर्णपाती वन एक बायोम है जिसमें पर्णपाती वृक्षों का प्रभुत्व होता है जो मौसम के अनुसार अपने पत्ते खो देते हैं। पृथ्वी पर समशीतोष्ण पर्णपाती वन और उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन हैं, जिन्हें शुष्क वन भी कहा जाता है।

रेंगमा नागा जनजाति

अवलोकन:

रेंगमा नागा जनजाति ने हाल ही में नागालैंड के सेमिन्यु आरएसए मैदान में नगाडा उत्सव-सह-मिनी हॉर्नबिल महोत्सव का दो दिवसीय समारोह संपन्न किया।

रेंगमा नागा जनजाति के बारे में:

- रेंगमा नागा एक **तिब्बती-बर्मन जातीय समूह** है जो पूर्वोत्तर भारतीय राज्यों **नागालैंड और असम में निवास करता है।**
- भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार, नागालैंड में रेंगमाओं की जनसंख्या 62,951 है और असम में रेंगमाओं की जनसंख्या लगभग 22,000 है।
- वे अपने आप को " **नजोंग" या "इंजांग"** के नाम से **बुलाते हैं ।**
- **वे मंगोलॉयड नस्ल** से संबंधित हैं ।
- ऐसा **माना जाता है कि रेंगमा** अन्य नागा जनजातियों के साथ **दक्षिण-पूर्व एशिया से** युन्नान पर्वत श्रृंखलाओं को पार करके ऊपरी बर्मा क्षेत्र में बस गए।
- **रेंगमा लोगों में दास प्रथा प्रचलित थी** और दासों को सामान्यतः मेनुगेतेन्यू और इत् साकेसा नामों से जाना जाता था।
    - जब अंग्रेज नागा क्षेत्र में पहुंचे, तब गुलामी की प्रथा कम होती जा रही थी और ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय कोई भी रेंगमा गुलाम नहीं था।
- **अर्थव्यवस्था** :
    - रेंगमा जनजाति **कृषक** हैं ।
    - वे **झूम खेती** और **गीली खेती** के माध्यम से धान उगाते हैं । धान की मुख्य फसलों के अलावा, मौसमी फसलें और फल भी उगाए जाते हैं।
- **धर्म** : **परंपरागत रूप से** रेंगमा जनजाति **अलौकिक प्राणियों की पूजा करती** है । **अब** रेंगमा जनजाति के अधिकांश **लोग ईसाई हैं।**

- **त्यौहार** :
    - रेंगमा जनजाति कई मौसमी त्यौहार मनाती है जो उनकी कृषि से संबंधित होते हैं।
    - " **नगाडा** " रेंगमा जनजातियों का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है।

प्रश्न 1 : झूम खेती क्या है?

झूम खेती एक पारंपरिक कृषि पद्धति है जो मुख्य रूप से भारत के पूर्वोत्तर राज्यों और दक्षिण पूर्व एशिया के अन्य भागों में पाई जाती है। इसे स्थानांतरित खेती या स्लैश-एंड-बर्न कृषि के रूप में भी जाना जाता है। इस पद्धति में वन क्षेत्रों को साफ करना शामिल है, आमतौर पर वनस्पति को काटकर जला दिया जाता है, और फिर एक नई भूमि पर जाने से पहले थोड़े समय के लिए फसलें लगाई जाती हैं।

साइबेरियाई डेमोइसेल क्रेन

अवलोकन:

साइबेरियाई डेमोइसेल क्रेन, जिसका उपनाम सुकपैक है, ने 3,676 किमी से अधिक की दूरी तय करके भारत के राजस्थान तक सबसे लंबी प्रवासी उड़ान का रिकॉर्ड तोड़ दिया है।

साइबेरियाई डेमोइसेल क्रेन के बारे में:

- यह **सारस प्रजाति का सबसे छोटा पक्षी** है जो एकान्तप्रिय तथा सामाजिक व्यवहार वाला होता है।
- यह पक्षी भारतीय संस्कृति में प्रतीकात्मक रूप से महत्वपूर्ण है, जहां इसे **कूंज या कुरजा के नाम से जाना जाता है।**
- ये सारस **प्रवासी पक्षी हैं,** जो अपने प्रजनन स्थल से लेकर अपने शीतकालीन निवास तक लम्बी दूरी तय करते हैं।
- **निवास स्थान:** यह खेतों, **रेगिस्तानों, मैदानों और** पानी वाले मैदानों में निवास करता है।
- **वितरण:** वे **मध्य यूरोसाइबेरिया में,** काला सागर से लेकर मंगोलिया और पूर्वोत्तर चीन तक पाए जाते हैं।
- **प्रजनन क्षेत्र:** वे **मध्य यूरेशिया,** काला सागर से लेकर उत्तर-पूर्वी चीन और मंगोलिया तक प्रजनन करते हैं। यह भारतीय **उपमहाद्वीप और उप-सहारा अफ्रीका में सर्दियाँ बिताता है।**
- डेमोइसेल क्रेन आमतौर पर **हिमालय की घाटियों से होकर** नेपाल के रास्ते भारत में प्रवेश करते हैं, जबकि सुकपैक ने एक अलग मार्ग अपनाया, जो जैसलमेर के रास्ते भारत में प्रवेश करने से पहले रूस, कजाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, अफगानिस्तान और पाकिस्तान से होकर उड़ता था।
- **भारत में संरक्षण के प्रयास: खीचन** राजस्थान में प्रवासी पक्षियों के लिए एक प्रमुख पड़ाव है और यह **इस प्रजाति को समर्पित भारत का पहला रिजर्व बन गया है।**
- **संरक्षण की स्थिति**
    - **आईयूसीएन:** कम चिंता
- **खतरे:** वे आर्द्रभूमि के जल निकासी, आवास के नुकसान, अवैध पालतू व्यापार और शिकार के दबाव से खतरे में हैं।

प्रश्न 1: अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ की भूमिका क्या है?

इसकी प्राथमिक भूमिका में प्रजातियों की संरक्षण स्थिति का आकलन करना, दुनिया भर में जैव विविधता की स्थिति पर डेटा और विश्लेषण प्रदान करना, तथा संरक्षण प्रयासों के लिए मार्गदर्शन और रूपरेखा प्रदान करना शामिल है।

के-4 बैलिस्टिक मिसाइल

K-4 बैलिस्टिक मिसाइल के बारे में:

- यह एक **परमाणु-सक्षम बैलिस्टिक मिसाइल** है जिसकी मारक क्षमता **लगभग 3,500 किलोमीटर** है ।
- यह एक **ठोस ईंधन चालित मिसाइल** है जिसका पिछले कुछ वर्षों में पनडुब्बी प्लेटफार्मों से कम से कम पांच बार परीक्षण किया गया है।
- के-4 मिसाइल के सफल प्रक्षेपण से **भारत की परमाणु त्रिकोण में एक और ताकत जुड़ गई है,** जिसमें भूमि-आधारित मिसाइलें, हवा से प्रक्षेपित परमाणु हथियार और पनडुब्बी से प्रक्षेपित किए जाने वाले प्लेटफार्म शामिल हैं।
- इसे **रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) द्वारा विकसित किया गया है ।**
- **महत्व:** इससे भारत की परमाणु प्रतिरोधक क्षमता और सामरिक क्षमताओं को काफी बढ़ावा मिलेगा।

आईएनएस अरिघाट के बारे में मुख्य तथ्य

- इसे **अगस्त 2024 में चालू किया जाएगा।**
- यह भारत की दूसरी परमाणु ऊर्जा चालित बैलिस्टिक मिसाइल पनडुब्बी (एसएसबीएन) है, इससे पहले भारत की पहली परमाणु पनडुब्बी आईएनएस अरिहंत थी।
- इसका निर्माण विशाखापत्तनम स्थित **भारतीय नौसेना के जहाज निर्माण केंद्र** (एसबीसी) में किया गया।
- यह 3500 किलोमीटर से अधिक रेंज वाली चार परमाणु-सक्षम K-4 SLBM (पनडुब्बी से प्रक्षेपित बैलिस्टिक मिसाइल) या लगभग 750 किलोमीटर रेंज वाली बारह पारंपरिक वारहेड K-15 SLBM ले जा सकता है।

प्रश्न 1: रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) क्या है?

डीआरडीओ भारत सरकार की एक एजेंसी है जो रक्षा और सैन्य अनुप्रयोगों से संबंधित प्रौद्योगिकी और उपकरणों के अनुसंधान और विकास के लिए जिम्मेदार है। 1958 में स्थापित, डीआरडीओ रक्षा मंत्रालय के अधीन काम करता है और उन्नत प्रौद्योगिकी, प्रणालियों और उत्पादों को विकसित करके भारत की रक्षा क्षमताओं को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।